## धम विभाग

## दिनांक 15 फरवरीं, 1985

सं भो वि श्रम्बालः | 201 | 84 | 5668. — वूर्कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. के वि एण्ड कम्पनी, 212., एच. एम.टो. इन्सीलरो यूनिट, पंचकूला (अम्बाला) के श्रमिक श्री राम स्वरूप तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अत्र, भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गृह्र शिक्त गों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यवान इसके द्वारा तरकारी प्रधिभूतना सं० 3(44)-84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला को विवाद प्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय- निर्णय के लिये निर्दिश्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद है सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री राम स्वरूप की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

है:--

सं० ग्रो॰वि॰ श्रम्बाला / 104-84/5674. — चूं कि हिरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै॰ मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला ग्रामीण विकास एजैन्सी, कुरुक्षेत्र, के अमिक श्री तीर्य राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हुँ ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्टिसूचना सं० 3(44)84-3श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिष्टितियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, की विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्त्रकों तथा श्रीमैक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री तौर्थ राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो. वि./ग्रन्वाला/204-84/5680.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल को राय है कि मैं. सुनील राईस मिल्ज, फिरोजपुर रोड, सीवन, के श्रमिक श्री शिवराम तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

•इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 3(44)−84−3 श्रम, दिनांक 18 श्रप्रेंल, 1984, द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला, को विवाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रुमिक के वीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री शिव राम की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो. वि./ग्राई.डी./ग्रम्बाला/186-84/5686.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. प्रमुख ग्रभियन्ता, पी.डब्लयू.डी., पब्लिक हैल्थ, हित्याणा, चण्डीगढ़, 2. कार्यकारी ग्रभियन्ता, पी.डब्लयू.डी., पब्लिक हैल्थ, डिवीजन, पंचकूला (ग्रम्बाला) के श्रमिक श्री सर्वणु सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

म्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यातात विवाद को न्यायनिर्णय हेंतु निविष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठभूचना सं. 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रिष्ठिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री स्वर्ण सिंह की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठींक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./ग्रम्बाला/205-84/5693.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. मुनील राईस मिल्ज, फिरोजपुर रोड, सीवन, केश्रमिक श्री राम ताज तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णाय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री राम ताज की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहन का हकदार है ? बी०पी० सहंगल, संयुक्त सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग।

## दिनांक 14 फरवरी, 1985

सं .श्रो. वि./फरीदाबाद/19-85/5420.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. एको इण्डस्ट्रीज, प्लाट नं० 210, सैक्टर 24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री चन्द्र शेखर गिरि तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रीवितयम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का श्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीविसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुये श्रीवसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उबत श्रीवित्यम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय- मिणंय के लिखे निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बंधित मामला है:—

वया श्री चन्द्र शेखर गिरिकी सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं• ग्रो. वि/फरीदाबाद/12-85/5427--चूंकि हरियाणा के राज्यशाल को राय है कि में॰ राजहंस एम्पोरियम, 1जी/44, मार्फत बी॰पी॰, एन.ग्राई.टी., फरीदाबाद, के श्रीमक श्री जगजीत सिंह तथा उसके प्रवन्यकों के मध्य इसमें इसके बाद जिल्हित मामले में कोई ग्रीदोणिक विवाद है;

भीर चूंकि हरिकाका के राज्यपाल विशाद को न्यायनिर्मेश हेतु निविष्ट करना बांछनीय संग्रहत हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौबोगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिनियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उकत श्रिधनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्विष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथना सम्बन्धित वामला है:-

क्यां भी जगजीत सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?